अन्तरा-शब्दशक्ति

धूप फागुन की

ग़ज़ल संग्रह

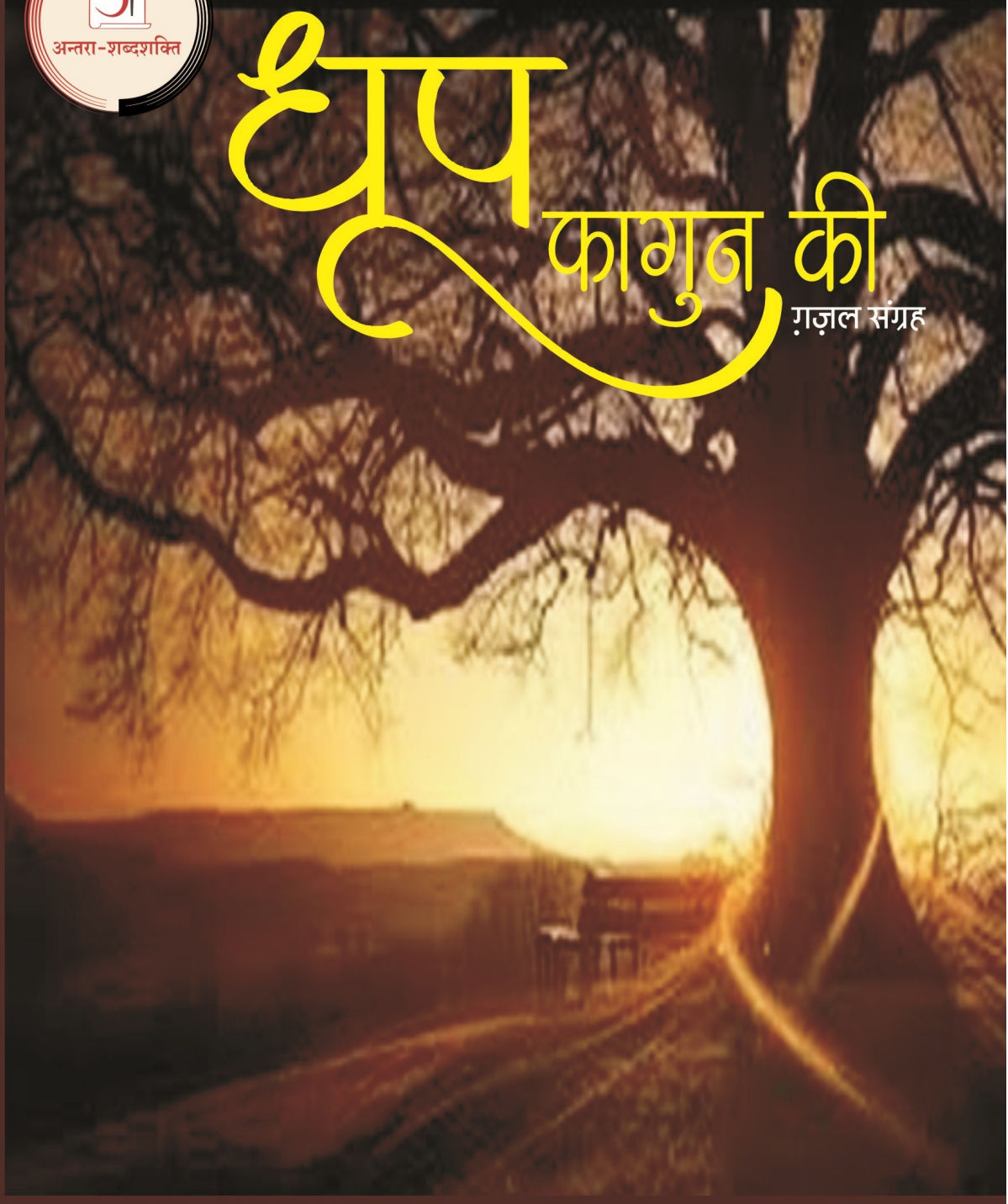

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

धूप फागुन की

(ग़ज़ल संग्रह)

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

अन्तरा- शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-006-3"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय-१५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९-ब्रजेश शर्मा विफल
मूल्य-६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
DHOOP FAGUN KI BY BRAJESH SHARMA VIFAL
वैधानिक चेतावनी-इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	प्रस्तावना	5
1.	धूप फागुन की	7
2.	इन दिनों	8
3.	रंग धानी है	9
4.	इश्क़ में हुस्न का चर्चा	10
5.	ज़रा सी ठेस से	11
6.	उतरी है कोई चाँदनी	12
7.	मेरी एक झलक	13
8.	आसमाँ आज खुला है	14
9.	चलो आगाज़ करते हैं	15
10.	नयन जा लड़े	16
11.	मसनुई मुस्कान होठों पर	17
12.	कारवाँ साँसों का	18
13.	यूँ ज़िन्दगी में इश्क़	19
14.	आँखों-आँखों में कटी हैं सदियाँ	20
15.	नया ज़माना	21
16.	धड़कनों की बन्दगी	22
17.	है इबारत इश्क़ की	23
18.	मैं मुसाफ़िर	24
19.	थम गयी ये ज़मीं	25
20.	मैं मुक़ाबिल हूँ	26

21. वक़्त सा 27
22. आँखों का समंदर 28
23. दे आयें हैं खंजर को 29
24. देश की आन 30
25. ग़ैर की बज़्म 31
26. ना जाने कब सोयी अम्मा 32

प्रस्तावना

हालांकि प्रस्तावना के नाम पर कहने को कुछ विशेष नहीं हैं, पर हर प्रकाशन की कुछ औपचारिकताएं होती हैं उसी के मद्दे नज़र,...

ग़ज़लों से मेरा परिचय तब से है, जब से मुझे उनकी कुछ खास समझ नहीं थी, धीरे धीरे मेहँदी हसन, गुलाम अली और जगजीतसिंह जी का नशा ऐसा छाया कि आज तक उतरा नहीं है, धीमे-धीमे कुछ तुकबन्दियाँ भी शुरू कर दीं,..

बहुत बाद में ग़ज़ल गुरु आ. विजय स्वर्णकार जी के इस कथन ने कि, जो बह्र में नहीं वो कुछ भी हो सकता है,मगर ग़ज़ल नहीं, धीमे-धीमे उन्हीं के सान्निध्य में ग़ज़ल की बारीकियाँ सीखीं, कितना सीख पाया हूँ ये तो आप सब पाठक ही बता पायेंगे,...

ग़ज़ल हमें सबसे बड़ी सुविधा ये देती है कि हम मात्र दो मिसरों में अपनी मुक़म्मल बात कह देते हैं, इसलिए जुदा मिजाज़ के अशआर, एक ग़ज़ल में अमूमन पाये जाते हैं और मैं भी इससे कोई अछूता नहीं हूँ, भाव गाम्भीर्य, और मीटर की दृष्टि से, कहाँ तक सफल हूँ, इसका फ़ैसला आप सुधि पाठकों पर छोड़ता हूँ, कुछ अच्छा लगे तो वो आपका प्राप्य है, जो ख़राब है वो मेरी कच्ची क़लम का निमित्त, अपनी बेशकीमती राय से अवगत ज़रूर करायें,...

ब्रजेश शर्मा विफल

धूप फागुन की

न जीने का शऊर आया न मरने का क़रीना है,
मुझे रुसवा किया जिसने वो रंगों का रुबीना है,

मैं जिसपे मर मिटा यारो, परी सी इक हसीना है,
वो जैसे **धूप फागुन की** या सावन का महीना है,

है जिसका लहज़ा गीतों सा, ग़ज़ल सी; जो रवाँ मुझमें,
है उसकी साँस सन्दल सी गुलाबों सा पसीना है,

मुझे मतलब नहीं अलमास गौहर सोने चाँदी से,
कि उसकी झील सी आँखें ही बस मेरा दफीना है,

वो उसकी शहद सी बातें वो उसका सर झुका लेना,
मेरे मौला लगाना पार ख़तरे में सफ़ीना है,

ये माना इश्क़ मेरा दर ब दर भटका; तो क्या दिक़्क़त?
मुहब्बत; सुनते आये हैं जनम से ही नबीना है,

तले माँ बाप के पांवों के; जन्नत आसमानों की,
वहीं काबा वहीं काशी वहीं मक्का मदीना है,

वो मेरी साँसों में घुलकर हिना सा मुझमें है बिखरा,
बिना उसके मेरा जीना भी यारों कोई जीना है,

"विफल" नफ़रत के हामी जानें क्या तासीर चाहत की,
अँधेरी रात रोशन कर दे उल्फ़त वो नगीना है,

इन दिनों

पीर मौसम में कोई घुलने लगी है,
दर्दे दिल की हर दुकाँ सजने लगी है,

ज़िन्दगी किस मोड़ पर आकर के ठहरी,
इन दिनों ख़ामोशी भी चुभने लगी है,

रम रहा आवारगी के दश्त में मन,
उसमें पर तन्हाई इक बसने लगी है,

रंग गहरे ज़ीस्त में भर तो लिये हैं,
शोख़ उसकी अब नज़र घुलने लगी है,

दर्द माज़ी के अभी तक भी हैं ताज़ा,
मुझमें इक दहशत नयी भरने लगी है,

देखें अब क्या क्या नये से ज़ख्म देगी,
फिर से वो वादा वफ़ा करने लगी है,

इक बरस सहरा में क्या गुज़रा है मेरा,
प्यास इक भूली सी फिर जगने लगी है,

इश्क़ है आसेब सा; उसने सुना जब,
हाथ में तस्बीह वो रखने लगी है,

इन दिनों मैं हुस्न लिखता हूँ विफल,
उसकी आँखों में नमी दिखने लगी है,

रंग धानी है

उनके लब पे जब से रख दी है ग़ज़ल,
राधिका सी मुस्कुराती है ग़ज़ल,

प्रेम की चिंगारियाँ ले दस्त में,
आग नफ़रत की बुझाती है ग़ज़ल,

मेरा हासिल उसको है बेकार जब,
मौसमों में ग़ुम उदासी है ग़ज़ल,

हर तरफ फैली हो कितनी तीरगी,
आस के जुगनू जलाती है ग़ज़ल,

ऊब जाती जीस्त जब इस शोर से,
लोरियाँ मुझको सुनाती है ग़ज़ल,

इश्क में शामिल हैं कुछ मायूसियाँ,
इक मुकम्मल रंग धानी है ग़ज़ल,

दर्द जब भी मुझको दुनिया ने दिए
माँ का साया हो ही जाती है ग़ज़ल,

शाम सिंदूरी नहीं तो क्या हुआ,
आरिज़ों के उसकी, पाती है ग़ज़ल,

भूल जाता हूँ विफल ख़ुद को भी पर,
ख़्वाब में भी याद रहती है ग़ज़ल,

इश्क़ में हुस्न का चर्चा

जो सुना ही नहीं वो कहा कीजिये,
जो कहा ही नहीं वो सुना कीजिये,

आपको हमने माना है अपना खुदा,
अब जफ़ा कीजिये या वफ़ा कीजिये,

साँस मेरी अटकती है जाने कहाँ?
मत खुदा के लिए चुप रहा कीजिये,

आपसे मिलना जीने का उन्वान है,
हमसे गाहे ब गाहे मिला कीजिये,

इश्क़ में हुस्न का चर्चा है लाज़िम मगर,
हुस्न को अपना पर मत खुदा कीजिये,

मिल ही जायेगा मुझसे भी बेहतर कोई,
मेरे जाने का मत यूँ गिला कीजिये,

ये जहां की फ़िज़ा पुरख़तर इन दिनों,
आप साँसों में मेरी बसा कीजिये,

बिन कहे भाँप ले मन की आँधी के रुख,
उसको ही कश्ती का नाख़ुदा कीजिये,

सो गया हूँ ज़मीरों के जैसे विफल
मुझको इक नाश सा ही गिना कीजिये,

ज़रा सी ठेस से

ज़रा सी ठेस से ये दिल का शीशा टूट जाता है,
किसी के रूठने से क्यूँ ये मन आँसू बहाता है,

उसी को जानती है मानती है पूजती दुनिया,
अँधेरी बस्तियों में जो बुझे दीपक जलाता है,

मज़ा लेना है जीने का तो उस बच्चे से सीखो तुम,
जो टूटे साहिलों पर भी घरौंदो को सजाता है,

मेरी आवारगी बेपर्द है उस शख्स पर जब से,
नज़र मिलते ही जाने क्यूँ निगाहें वो झुकाता है,

नहीं है जग में उससे बढ़ के कोई भी ख़ुदा यारो,
ग़मों की रात में काँधे से जो हमको लगाता है,

वो जुगनू ही सही लेकिन उसे ख़ुद पर यकीं इतना,
अँधेरी रात में वो चाँदनी सा जगमगाता है,

मैं अपना वास्ता देकर उसे खामोश तो कर दूँ,
सुना है उसके अश्क़ों से ख़ुदा मोती बनाता है,

चलो अब देख लें चल कर विफल हम उसके मक़तल को,
गरेबाँ चाक करने को कोई फिर से बुलाता है,

उतरी है कोई चाँदनी

अब हाथ मुझे अपना सम्हलने के लिए दे,
या हौसला मुझको तू बिखरने के लिए दे,

राहें तो हैं दुश्वार बहुत इश्क़ की लेकिन,
झूठा सा ही वादा कोई चलने के लिए दे,

काबिज़ है शिखर पे वो अना आज तलक भी,
इक राह उसे कोई उतरने लिए दे,

उतरी है कोई चाँदनी ;है बर्फ़ रगे जाँ,
सूरज की किरण एक तो जलने के लिए दे,

एहसास जमे जाते हैं इस सर्द फ़ज़ा में,
तू साथ ज़रा सा तो पिघलने के लिए दे,

अब रेत पे साहिल की मुझे कौन मिलेगा,
इक सीप मेरे मन को बहलने लिए दे,

हम इश्क़ के मारों का ठिकाना है न मक़्तल,
थोड़ी सी जगह दिल में ठहरने के लिए दे,

मुद्दत से नहीं देखी है सूरत विफल अपनी,
तू आँखों के आईने संवरने के लिए दे,

मेरी एक झलक

अपनी आँखों में मेरी एक झलक रहने दे,
कोई मरहम नहीं ज़ख्मों की कसक रहने दे,

इन दिनों अपनी ख़बर भी नहीं आती कोई,
अपनी यादों का गुमाँ दूर तलक रहने दे,

मैं तुझे ख़्वाब में छूकर ही चला जाऊँगा,
मेरी साँसों पे मेरा इतना तो हक़ रहने दे,

राग साज़ों के विदा हैं मेरी जीस्त से जब,
मेरे आँगन में तो पायल की खनक़ रहने दे,

टूट जाते हैं शज़र वो जो तने रहते हैं,
तुझको जीना है तो थोड़ी सी लचक रहने दे,

उम्र भर कागज़ी गुल ही तो सजाए तूने,
कुछ गुलों में तो जरा असली महक रहने दे,

लाज औ शर्म भी गहने हैं निगाहों के विफल,
दरमियां रिश्तों के थोड़ी सी झिझक रहने दे,

आसमाँ आज खुला है

रस्मे उल्फ़त यूँ निभाता है कोई,
आँख मिलते ही झुकाता है कोई,

छुप के आवाज़ लगाता है कोई,
मुझको यूँ अपना बनाता है कोई,

अपनी तन्हाई में रोना छिपकर,
दाग़ दिल के यूँ मिटाता है कोई,

इससे बढ़कर न इबादत दूजी,
पाँव माँ के जो दबाता है कोई,

ख़्वाब गर टूटे तो टूटेगा वो,
इसलिए इनको बचाता है कोई,

मेरे अशआर सुनाकर मुझको,
मुझको मुझसे ही मिलाता है कोई,

आसमाँ आज खुला है खिलकर,
रोते बच्चे को हँसाता है कोई,

कोई आवाज़ न दस्तक़ है विफल,
इस तरह दिल में समाता है कोई ?

चलो आगाज़ करते हैं

चलो आगाज़ करते हैं नया फिर से कहानी में
नहीं पहले सा कुछ भी शेष इस दुनिया ए फ़ानी में,

अटक जाता हूँ क्यूँ अक्सर मैं उसकी नम निगाही पर,
छुपे हैं रँग अनगिन जब चुनरिया उसकी धानी में,

फ़क़त बातें बनाने से नही होता है कुछ हासिल,
जवानी वो जवानी है लगा दे आग पानी में,

कभी बेवक़्त आकर के मुझे हैरत में' डाले वो,
रखी है इल्तिज़ा मैंने यही अपनी ज़ुबानी में,

मुझे तुम याद आओगे तुम्हे मैं याद आऊँगा
यही हैं राब्ते अपने मुहब्बत की निशानी में,

मुहब्बत कौल है ऐसा ज़ुबां से हम नहीं कहते,
कहीं वो नाम आ जाये न दिल की ख़ुशबयानी में,

भरोसा कैसे कर लूँ कैसे दिल दे दूँ तुम्हें जानाँ,
अभी बच्चों सी बातें हैं तुम्हारी पुर जवानी में,

नयन जा लड़े

ये कैसा अजब सानेहा हो गया है,
रक़ीब अपना हम पे फ़िदा हो गया है,

जो ढंग से अभी तक मिला भी नही था,
वही फ़र्द हमसे जुदा हो गया है,

न भाती थी कल तक जिसे कोई भी शय,
सुना है कि वो आशना हो गया है,

मेरे ख्वाब तुम अपनी आँखों में रख लो,
मिरा उससे ये मशवरा हो गया है,

बोये हैं गुल रंग ओ बू के चमन में,
ये क़ातिल मेरा क्या से क्या हो गया है??

नयन जा लड़े नैनों के चाराग़र से,
बची फीस ये फायदा हो गया है,

जिसे इश्क़ कम्बख्त छेड़े है दिल से,
हुआ वो विफल या निदा हो गया है,

मसनुई मुस्कान होठों पर

जब जला हूँ दीप सा सुधियाँ तेरी,
अर्घ्य होकर नैन से मेरे बही,

बात जो अधरों पे आ न पाई वो,
तेरी नम आँखों ने शायद है कही,

मसनुई मुस्कान होठों पर लिये,
क्या बताएं वेदना क्या क्या सही,

चाँदनी की खुशबुएँ,पहलू में तुम,
वक़्त बरहम है ये कैसी बेबसी?

ना इबादत प्रार्थना कोई ऋचा,
एक वो सूरत ही बस मन में रही,

ग़ुम हुआ उसके ख्यालों से यूँ मैं,
कोई शबनम जैसे पत्तों से झरी,

चाँदनी ठहरी हुई थी झील में,
बन हँसी मेरे लबों पर आ थमी,

राम से; जीवन में वो आये विफल,
साँस ठहरी थी अचानक चल पड़ी,

कारवाँ साँसों का

कारवाँ साँसों का यूँ तो चाल अपनी चल रहा,
दर्द अनजाना सा कोई; रागिनी में ढल रहा,

तुम भी चुप थे मैं भी चुप खामोशियाँ थी दरम्याँ,
बेसबब सा दर्द लेकिन मन ही मन में पल रहा,

दीपकों ने रोशनी के भार क्या काँधे लिए,
अब अँधेरा कसमसा कर हाथ अपने मल रहा,

भूलकर संकल्प अपने फिर रिझाई रूठी शाम,
भोर का दिनकर मग़र क्यूँ जुगनूओं से जल रहा,

था गुमाँ जिनको हुनर पर डूबे वो मँझधार में,
डूबते को एक तिनके का मगर सम्बल रहा,

तुम तो खुश थे लब पे अपने अश्कों के मोती लिए,
झूठी मुस्कानों से पर क्यूँ; खुद ही को मैं छल रहा,

आँसुओं को प्यास के उन्वान जब से रास हैं,
बर्फ की मानिंद अन्तस् में ये क्या जो गल रहा,

फैसले बेहद अजब हैं इन लकीरों के विफल,
कल तलक था हाशिये पर आज जो अव्वल रहा,

यूँ ज़िन्दगी में इश्क़

यूँ ज़िन्दगी में इश्क़ सी ज़िल्लत नहीं रही,
टूटे हैं इस तरह से के हिम्मत नहीं रही,

नफ़रत के पैकरों में ढले दैरो हरम जब,
हमको किसी शनाश से उल्फ़त नहीं रही,

बस आँख भर के देखा नज़ारे भी थम गये,
बाद इसके कोई ख्वाहिशे-जन्नत नहीं रही,

यूँ उसकी बारगाह में सर बारहा झुका,
हमको किसी ख़ुदा की पर आदत नहीं रही,

टूटे हुए हैं ख़ाब नये सिलसिले अयाँ,
दुनिया में कुछ पुरानी रवायत नहीं रही,

जो अब ज़माने भर का है मेरा था वो कभी,
इक नाख़ुदा की मुझपे इनायत नहीं रही,

इक आग में जले हैं यूँ तपकर निखर गये,
अब हमको दुश्मनों से अदावत नहीं रही,

है अपनी मुस्कुराहट तो पहले सी ही विफल,
बस उनके ग़म उठाने की ताक़त नहीं रही,

आँखों-आँखों में कटी हैं सदियाँ

जागी आँखो में प्यास रहने दो,
थोड़ा मुझको उदास रहने दो,

आँखों आँखों में कटी हैं सदियाँ,
उसके आने की आस रहने दो,

तल्खियों से तो दिल ही टूटेंगे,
लब पे थोड़ी मिठास रहने दो,

चाँद जायेगा गहन में फिर से,
दो घड़ी तो उजास रहने दो,

तुमसे दूरी तो है मुक़द्दर ही,
एक लम्हा तो पास रहने दो,

जीस्त उलझी है मात और शह में,
कोई प्यादा तो खास रहने दो,

कोई तितली ही भटककर आये,
कुछ गुलों में सुवास रहने दो,

ताज़ औ तख्त की दरकार नहीं,
मुझको चरणों का दास रहने दो,

नया ज़माना

नया ज़माना,
तौर पुराना

कैसे पाऊँ ?
दिल बेगाना

जीवन क्या है?
राग पुराना

मेरा मुझमें,
नही ठिकाना

साँस साँस क्या?
खोना पाना

सुख बतलाओ
तेरा आना

फिर दुख क्या है?
तेरा जाना

दर्द है बाक़ी,
क्या पछताना?

इश्क़ किसी से?
ना ना ना ना

धड़कनों की बन्दगी

ज़िन्दगी में आज तक हमको मिला कुछ भी नहीं,
और इक तेरे सिवा चाहा था क्या? कुछ भी नहीं,

अपना तो ये फ़लसफ़ा अच्छा बुरा कुछ भी नहीं,
तू मेरा औ मैं तेरा इससे भला कुछ भी नहीं

धड़कनों की बन्दगी में रूह के उन्वान में,
साँस के हर राग में तेरे सिवा कुछ भी नहीं,

इश्क़ तुमको ना सही हम मान लेते ये; मगर,
आपकी आँखों में ये मुझसा है क्या ! कुछ भी नहीं?

चाँद आधा रात आधी याद के आधे निशाँ,
इस जहाँ में क्या मुक़म्मल तुझ सिवा कुछ भी नहीं,

ये धरा पूरी की पूरी एक ही परिवार है,
अपनी ऋचा में आज तक तेरा मेरा कुछ भी नहीं,

पत्थरों ने भर लिए ख़ुद में हुनर कुछ इस क़दर,
सामने उनके वो सचमुच का ख़ुदा कुछ भी नहीं,

मौलवी ताबीज़ गंड़े अर्चना पूजा विफल,
इश्क़ की चारागरी सी पर शिफ़ा कुछ भी नहीं,

है इबारत इश्क़ की

ज़िंदगी तेरे भी कितने बेवज़ह नख़रे हुए,
खौफ़ के मन्ज़र यहाँ चेहरे भी सब उतरे हुए,

इक मुसलसल आपा धापी रात दिन की भागदौड़,
क़ाफ़िले अहसास के लेकिन यहाँ ठहरे हुए,

कोई चारागर मिला ना ही मिला कोई ख़ुदा,
इक ज़माना हो गया है टूट कर बिखरे हुए,

है इबारत इश्क़ की औ खुशबुओं के पैरहन,
रूह उरियाँ ही सही पर दर्द हैं निखरे हुए,

वक़्त ने बदली इबारत सूरतें पिन्हा हुईं,
दिल की दीवारों पे लेकिन नाम थे उभरे हुए,

हिज्र की कैसी रवायत वस्ल के कैसे उसूल,
झाँकता चिलमन से कोई दीद पर पहरे हुए,

चेहरे टंगे सम्मान के रुसवाइयों की कील पर,
नाख़ुदा अंधे यहाँ सब रहनुमा बहरे हुए,

मैं मुसाफ़िर

रंग सौ सौ मुकद्दर बदलता रहा,
कोई अपना बनाकर के छलता रहा,

आईने यूँ तो बदले थे मैंने कई,
अक़्स चेहरे में तेरे ही ढलता रहा,

इस क़दर तेरे आने की उम्मीद थी,
इक दीया आँधियों में भी जलता रहा,

मुस्कुराहट लबों पर तो बिखरी बहुत,
दर्द भीतर मग़र एक पलता रहा,

रहनुमाओं ने छोड़ी नही कुछ कसर,
शम्स परदों से बाहर निकलता रहा,

माँ की मजबूरियाँ भूख को यूँ फरेब,
बस पतीली में पानी उबलता रहा,

मैं गिरा इश्क़ में और फ़ना हो गया,
ये तो तू था जो गिर के सम्हलता रहा,

वो रहा मील के पत्थरों की तरह,
मैं मुसाफ़िर था हर वक़्त चलता रहा,

थम गयी ये ज़मीं

हाथ से इस तरह रूह औ' दिल गये,
ज़ख्म भरने से पहले ही सब छिल गये,

थम गयी ये ज़मीं झुक गया आसमाँ,
हम तो जब भी तुम्हारे मुक़ाबिल गये,

इस तरह जलवागर हो गये साँप याँ,
हाथ से चूहों के अपने ही बिल गये,

इक नमी आँखों' में यूँ उतर आई है,
शबनमी भोर में जैसे दिल हिल गए,

तुमने आवाज़ दी मोजिज़ा हो गया,
मैं तुम्हारा हुआ तुम मुझे मिल गए,

बाद मुद्दत निगाहों में छाया कोई,
मन भँवर सा हुआ औ कमल खिल गए,

ज़िन्दगी चन्द साँसों का वो खेल है,
कुछ कहा भी नही और लब सिल गए,

अय विफल रास्ता तू भी चुनना वही,
जिस डगर पे भगत और बिस्मिल गये,

मैं मुक़ाबिल हूँ

रंग अपने मुझको तू सारे दिखा ले ज़िन्दगी,
मैं मुक़ाबिल हूँ मुझे भी आज़मा ले ज़िन्दगी,

रूठकर मुझसे गयी तो कौन पूछेगा तुझे?
मुझसे तू है, तुझसे मैं, आकर मना ले ज़िन्दगी,

मेरी ग़ुरबत ने रखी हैं ख्वाहिशों पर बंदिशें
पर अमीरों की तरह तू तो मज़ा ले ज़िन्दगी,

मैं वो गुल हूँ ख़ार जिसमें, खुशबुएँ पर बेशुमार,
बालों में गज़रे सा मुझको तू सजा ले ज़िन्दगी,

तुझसे मैं रूठा हुआ हूँ क्या तुझे इमकान है?
तिश्नगी किस और ही दर से बुझा ले ज़िन्दगी,

अपने सुख में गुम हैं वो मुख मोड़ते जो फ़र्ज़ से,
आइने सी हो के उनको भी सता ले ज़िन्दगी,

हम दीवाने मयकदा छोड़ें न, डर से; मौत के,
जाम में भरकर ज़हर कितना पिला ले ज़िन्दगी,

चाट कर गैरों के तलवे गर विफल हासिल तो क्या?
भूले भटके अपनों की भी कुछ दुआ ले ज़िन्दगी,

वक़्त सा

वक़्त सा; बहता हुआ दरिया हूँ मैं,
पर भँवर सा इक जगह ठहरा हूँ मैं,

तंज़ क्यूँ करते हो फ़ितरत पे मेरी?
जैसे तुम हो दोस्तों वैसा हूँ मैं,

तीरगी में रोशनी की बात हूँ,
भोर पर शब का मगर पहरा हूँ मैं,

ज़िल्लतें, रुसवाइयाँ, बेचारगी,
इश्क़ में क्या क्या नहीं सहता हूँ मैं,

पाँव में छाले पड़े हैं इन दिनों,
आदतन थक कर नही बैठा हूँ मैं,

हाल बदलेंगे कभी तो मुल्क के,
देख उसकी चाल ये कहता हूँ मैं,

लौट कर आएगा रूठा आशना,
बस इसी उम्मीद पर जीता हूँ मैं,

चल पड़ा हूँ पर कहीं पहुँचा नहीं,
दौरे-कोल्हू से कहाँ निकला हूँ मैं ?

आँखों का समंदर

इक कलम फ़िर या कि खंज़र देखना,
हाथ में अपने मुक़द्दर देखना,

जीत कर दुनिया को सारी क्या मिला?
हारा है ख़ुद से सिकन्दर देखना

हाथ में लेकर नमक की थैलियाँ,
हर सू फैले हैं सितमगर देखना,

मीठे होंगे झूठ के सब आचमन,
सत्य के तुम कड़वे पैकर देखना,

नाखुदाओं ने डुबाईं कश्तियाँ,
भेष में रहजन के रहबर देखना,

ज़िन्दगी के फ़लसफ़े अच्छे बुरे,
कितना आसाँ खुद ही मर कर देखना,

फूल के आदाब सिखलाये जिन्हें,
हाथ में उनके ही पत्थर देखना,

डूबना फिर डूबना बस डूबना,
उसकी आँखों का समंदर देखना,

दे आयें हैं खंजर को

दे आयें हैं खंजर को, सीने का पता देखो,
मिलता है मुहब्बत में, क्या हमको सिला देखो,

रूठे हैं न हम तुमसे,ना तुम से ख़फ़ा देखो,
हम अपनी अना में तो, हैं सबसे जुदा देखो,

ये इश्क़ के सज़दे हैं, क्या जाने तमाशाई,
जब चाँद के माथे पर, इक दाग़ लगा देखो,

हम जाँ भी लुटा देंगे,इक उनके इशारे पर,
जाकर तो न लौटेंगे, अपनी भी अदा देखो,

साहिल पे भी दरिया के, हम प्यासे ही रह लेंगे,
लेते नहीं गैरों से, एहसान जरा देखो,

हैं लब पे हिकायत भी, ओ हाथ में तस्बीहें,
फरियाद भी जाने क्यूँ सुनता न ख़ुदा देखो,

बरसात कोई अपने,भीतर भी है बाहर भी,
पर उन के उजालों को, ये दिल भी जला देखो,

देश की आन

मुद्दे शिद्दत से इतनी उछाले गये,
चंद मुर्दे शहर से निकाले गये,

भूख बच्चों की औ माँ की मजबूरियाँ,
संग पानी में शब भर उबाले गये,

आ गये उनको सोने से वो तौलने,
जिनके मुँह में न अब तक निवाले गये,

फ़िक्र चोरों की हैं, उनका चर्चा नहीं,
देश की आन पर जो जियाले गये,

यूँ तो शिव हो गये हम भी पीकर ज़हर,
ख़ुद से ख़ुद हम मगर ना सम्हाले गये,

माँ की मुस्कान सा ही सुकूँ ना मिला,
लाख काबा गये औ शिवाले गये,

ये गिला ग़ालिबन हर इक ग़ालिब का है,
तेरे कूचे से हम भी निकाले गये,

ग़ैर की बज़्म

एक लम्हे को नक़ाब अपना उठा देते हैं,
इस तरह अपने मरीजों को शिफ़ा देते हैं,

ग़ैर की बज़्म में वो करके दो बातें मुझसे,
मेरे ज़ख्मों पे भी मरहम सा लगा देते हैं,

हमनें तो इश्क़ को अपने; है,इबादत समझा,
आप कहिये क्या गुनाहों की सज़ा देते हैं?

आपने बारहा ठुकराई है अर्ज़ी दिल की,
हम तो इसरार पे अशआर सुना देते हैं,

छोड़ जाते हैं किसी याद के टुकड़े मुझमें,
मेरे क़ातिल यूँ मुझे अपना पता देते हैं,

उम्र जलती हुई और एक दुआ शबनम सी,
प्यास जन्मों की वो इक पल में जगा देते हैं,

देखकर गौर से; जुल्फों को झटक कर अपनी,
आग बहते हुए पानी में लगा देते हैं,

मैंने पूछा जो कभी इश्क़ का हासिल है क्या?
वो चरागों को जलाकर के बुझा देते हैं,

है अजब इश्क़ की तासीर "विफल" सोचो तो,
लोग बातों ही में जागीर लुटा देते हैं,

ना जाने कब सोयी अम्मा

ना जाने कब सोयी अम्मा,
ना जाने कब जागी अम्मा,

बाबूजी के ना रहने पर,
चुपके चुपके रोयी अम्मा,

गुमसुम गुमसुम भूली बिसरी,
हो गयी बात पुरानी अम्मा,

ऊंच नीच समझाने वाली,
जाने क्यों चुप रहती अम्मा,

कष्ट साँस के देह की पीड़ा,
छुप छुप कर ही सहती अम्मा,

तुलसी के बिरवे के सम्मुख,
देती नहीं दिखाई अम्मा,

बैंगन लौकी दाल मूँग की,
सहज भाव खा लेती अम्मा,

ऐसा पहली बार ही देखा,
भोर हुए तक सोयी अम्मा,

गाँठ पड़े रिश्तों की उलझन,
नहीं विफल सुलझाती अम्मा

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - ब्रजेश शर्मा 'विफल'

जन्म - 26 अगस्त 1965, मेरठ (उ.प्र.)

शिक्षा - बी.एस.सी., बी.एड., एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य)

पता - 1199/1 ईसाई टोला, दिलदार नगर, खाती बाबा
परी इंटरनेट प्लाजा के पास, झांसी (उ.प्र.) 284003

मो.नं. - 9451171389, 8218661037

ई मेल -braj.vifal4@gmail.com

प्रकाशन -18 से अधिक सांझा काव्य संकलन।
राष्ट्रीय समाचार पत्र और पत्रिकाओं, प्रयास अंतर्राष्ट्रीय इ पत्रिका एवं राष्ट्रीय इ पत्रिकाओं, अंतरा शब्द शक्ति एवं अन्य में रचनाओं का प्रकाशन।
उसकी नीलाभ आँखों में (नज़्म संग्रह)-अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन।

सम्मान - गज़ल सागर झुंझनू द्वारा 'साहित्यकार सम्मान',
विश्व हिंदी रचनाकार मंच द्वारा 'काव्यश्री'सम्मान।
हिंदी सागर सम्मान, प्रतिमा रक्षा सम्मान, करनाल द्वारा ग्रेट अचीवर्स अवार्ड।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, सोपान काव्य सम्मान, काव्य मनीषी सम्मान, युग सुरभि सम्मान।
श्री रामसेवक सम्मान, वागेश्वरी पुंज अलंकरण सहित कई सम्मान एवं ऑनलाईन सम्मान।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-006-3

मूल्य- 60/-